अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार द्वि भाषिकता या बहुभाषिकता से निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होते हैं। त्रिभाषा फार्मूला भारत की भाषा स्थिति की चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने का एक प्रयास है यह एक रणनीति है जिसे कई भाषाऐं सीखने के मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए। इसे कार्यरूप और भाव रूप दोनों ही में अपनाने की आवश्यकता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत में बहु भाषिकता और राष्ट्रीय सद्भाव का प्रसार है। निम्नलिखित दिशा निर्देश इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं–

- भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए केवल कई भाषाओं के शिक्षण के ही अर्थ में नहीं बल्कि रणनीति तैयार करने की दृष्टि से भी जिससे बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के रूप में प्रयोग में लाया जाय।
- बच्चो की घरेलू भाषा (एँ), स्कूल में शिक्षण का माध्यम होनी चाहिये।
- यदि स्कूल में उच्चतर स्तर पर बच्चों की घरेलू भाषा (ओं) में शिक्षण की व्यवस्था न हो तो प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषा (ओं) के माध्यम से ही दी जाय। यह आवश्यक है कि हम बच्चे की घरेलू भाषाओं को सम्मान दें। हमारे संविधान की धारा 350–क के अनुसार, 'प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक वर्गो के बालकों के शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।'
- बच्चे प्रारंभ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकेगें। त्रिभाषा फार्मूला को उसके मूलभाव के साथ लागू किये जाने की जरूरत हैं जिससे वह बहुभाषी संवाद के माहौल को बढ़ावा दें।

- गैर हिन्दी भाषी राज्यों में बच्चें हिन्दी सीखते हैं। हिन्दी प्रदेशों के मामले में बच्चे व भाषा सीखे जो उस इलाके में नहीं बोली जाती है । इन भाषाओं के आलावा आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन भी शुरू किया जा सकता है।
- बाद के स्तरों पर शास्त्रीय और विदेशी भाषाओं से परिचय करवाया जा सकता है।

शोधकर्ता को भाषा से संबंधित यह समस्या निर्माण हुई है कि पाठ्यपुस्तक में तत्सम तथा तद्भव शब्दों को ज्ञात करना तथा उनमें छात्रों की उपलब्धि ज्ञात करना। इसे ध्यान में रखकर कक्षा छ की पाठ्यपुस्तक तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करने का न्यूनतम प्रयत्न किया है।

5.1 संक्षेपिका –

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। अध्यायवार संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। प्रथम अध्याय में शोध का परिचय है द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया चतुर्थ अध्याय के प्रथम भाग में तत्सम तथा तद्भव शब्दों का विवरण तथा द्वितीय भाग में प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या है। पंचम अध्याय में शोध सार निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में सदर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट में उपयोग में लिए गये उपकरणों को लिया गया है।

5.2 शोध का शीर्षक –

"कक्षा ६ की हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त तत्सम तथा तद्भव शब्दों में छात्रों की उपलब्धि का परीक्षण"

5.3 शोध के उद्देश्य –

कक्षा ६ की हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त शब्दों का विश्लेषण करना तथा उन शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि को ज्ञात करना है। अतः यह स्थूल रूप से दो प्रकार का है–

(अ) कक्षा ६ की हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक के एक गद्य व एक पद्य पाठ में तत्सम तथा तद्भव शब्दों को ज्ञात करना ।

(ब) (1) तत्सम तथा तद्भव शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि को ज्ञात करनां।

(2) ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की तत्सम शब्दों में उपलब्धि ज्ञात करना ।

(3) ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की तत्सम शब्दों में उपलब्धि ज्ञात करना।

(4) ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की तद्भव शब्दों में उपलब्धि ज्ञात करना ।

(5) ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की तद्भव शब्दों में उपलब्धि ज्ञात करना ।

5.4 सीमांकन –

1. भाषा पाठ्यपुस्तक में अनेक शब्द हो सकते हैं यथा–तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी तथा देशज। किन्तु हमारा अध्ययन तत्सम तथा तद्भव शब्दों तक ही सीमित है।
2. कक्षा ६ के गद्य भाग से एक पाठ व पद्य भाग से एक पाठ तक यह अध्ययन सीमित है। इन पाठों में तत्सम शब्दों तद्भव शब्दों को ज्ञात करने तक ही यह अध्ययन सीमित है।
3. भाषा में विद्यार्थियों की उपलब्धि कई प्रकार की हो सकती है किन्तु यह अध्ययन तत्सम शब्दों तथा तद्भव शब्दों की उपलब्धि में किया गया है।
4. इस अध्ययन के लिये न्यादर्श का चयन भोपाल जिले की एक ग्रामीण व एक शहरी शाला को यादृच्छिक विधि से किया गया हैं। जिसमें कुल 100 विद्यार्थी (50 छात्र, 50 छात्राऐं) थे।

5.5 निष्कर्ष एवं व्याख्या –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी का उपयोग करते हुए न्यादर्श के प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये है:–

1. तत्सम की तुलना में तद्भव शब्दों में छात्र–छाओं की उपलब्धि अधिक है।
2. ग्रामीण तथा शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की उपलब्धि तत्सम शब्दों में अधिक है।

3. ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं में ग्रामीण छात्राओं की उपलब्धि तत्सम शब्दों में अधिक है।

4. ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की तद्भव शब्दों में उपलब्धि एक समान है।

5. ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं में शहरी छात्राओं की उपलब्धि तद्भव शब्दों में अधिक है।

5.6 सुझाव –

1. पाठ्यपुस्तक में तत्सम तथा तद्भव शब्दों के अतिरिक्त देशी, विदेशी तथा देशज शब्दों को ज्ञात कर ये शब्द बहुभाषा को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं, यह ज्ञात किया जा सकता है।

2. जिन छात्र–छात्राओं की तत्सम, तद्भव शब्दों में उपलब्धि अधिक है उनकी विज्ञान विषय सीखने में उपलब्धि कितनी है।

5.7 भावी शोध हेतु समस्याऐं –

भविष्य के शोध हेतु प्रस्तावित समस्याएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन के लिए दी जा सकती है क्योंकि हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है तथा अनेक राज्यों में प्रचलित हैं। बहुभाषा को बढ़ावा देने के लिए तत्सम तथा तद्भव शब्दों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। इस दिशा में शोधकर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु महत्वपूर्ण समस्याएँ इस प्रकार है–

1. भाषा की उपलब्धि का परिणाम दूसरे विषय यथा विज्ञान गणित, सामाजिक अध्ययन सीखने में कैसे होगा यह ज्ञात किया जा सकता है।

2. कक्षा को बहुभाषी बनाने में भाषा की पाठ्यपुस्तक की रूपरेखा पर लघुशोध किया जा सकता है।

———00———